

“आवां” उपन्यास में सर्वहारा वर्ग के संघर्ष

डॉ.के. जानकी देवी

ए.एन.आर. कालेज, गुडिवाडा

Received: Sep. 2019 Accepted: Oct. 2019 Published: Nov. 2019

चित्रा मुद्गल सामाजिक उपन्यासकार है। उनके उपन्यासों में सामाजिक स्थितियों को परिप्रेक्ष्य में वैयक्तिक, पारिवारिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन के विभिन्न पक्षों का यथार्थ चित्रण किया गया है। सामाजिक समस्याओं के विशेष नेपथ्य में व्यक्ति और समाज के संबंधों पर उन्होंने प्रकाश डाला है। स्त्री-पुरुष के बदलते संबंधों को उपन्यासकार चित्रा मुद्गल ने नवीन दृष्टिकोण के साथ परिभाषित किया है। मूल्य विघटन के संदर्भ में वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में संवेदन शून्यता को चित्रित करने में उन्हें आशा-तीत सफलता मिली है। दलित चेतना का अंकन करते हुए उन्होंने सामाजिक न्याय की माँग की है। बेरोजगारों, मजदूरों और नारी की समस्याओं को ‘आवां’ उपन्यास में यथार्थ चित्रण पाया जाता है। सर्वहारा वर्ग की नारी के प्रति किए जाने वाले अत्याचारों का चित्रा मुद्गल ने जोरदार खंडन किया है। जीवन के ठोस अनुभवों की प्रेरणा और व्यक्तिगत दृष्टिकोण से प्रभावित आलोच्य उपन्यासकार प्रगतिशील चेतना को गतिशील कर सृजनकार्य में संलग्न हुई। नारी-जीवन के यथार्थ की कटु परतों के ऊपर मानवीयता अपनी सारी दुर्बलता, सबलता, कुरूपता और सौंदर्यशीलता के साथ साथ आत्मबल के नयेपन के लिए मूर्त रूप में साकार होकर चित्रित होती है। चित्रा मुद्गल का उपन्यास साहित्य सर्वहारा वर्ग की नारी की समस्याओं की व्याख्या को जनमानस की गतिशीलता में नवीन मूल्यों और मान्यताओं को स्थापित करता हुआ यथार्थ का समग्ररूप सामने रख देता है। समाज में भ्रष्टाचारियों तथा सामंत, प्रशासन के अपने पक्ष में कर लेते हैं। पुलिस, गुंडों के बल पर सर्वहारा वर्ग के दमन के लिए अमानवीयता की हद तक जाते हैं। इन सब के परिणामस्वरूप दोनों ही ओर से हिंसात्मक संघर्ष की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। कहीं-कहीं सर्वहारा अपने श्रम की कीमत, पूरी नहीं तो आधी ही सही, वसूलकर लेने में सक्षम हो जाते हैं। यह वर्ग कहीं सामूहिक हत्या का शिकार हो जाता है और सर्वनाश भी हो जाता है। सर्वहारा वर्ग की नारी के संघर्ष को चित्रा मुद्गल ने कई रूपों में चित्रित किया है।

‘आवां’ में किशोरीबाई के माध्यम से सर्वहारा वर्ग के प्रति किए गए अन्यायों को दिखाया गया है। ये लोग गन्दी, कुत्सित, न्यायव्यवस्था से न्याय पाने की उम्मीद रखते हैं और नहीं रखते हैं। अपनी बेटी के प्रति किए गए अन्यायों और अविश्वासों के प्रति आक्रोश से भरी वेदना चित्रित की गई है कि “‘विविचित्र है! अपीरों के लिए सुरक्षा के सौ-सौ ताले हैं; निर्धनों के लिए मात्र चरमराए उखड़े दरवाजें। काश! उसके पास इतनी संपदा होती की वह किशोरीबाई के चरमराए क्लिवाडों को लौह-कवच पहना सकती। उन्हें जीने का अधिक सुरक्षित विकल्प दे सकती। कैसे संभव है?’” गरीब और अपीरों की व्यवस्था समाज में कैसा है उसकी असुरक्षित स्थिति के बारे में यथार्थ चित्रण किया गया है। आर्थिक वैषम्यों को मिटाने तथा सम-समाज की स्थापना करने का आग्रह ‘आवां’ उपन्यास में द्रष्टव्य है। समाज में शोषक वर्ग अपना शोषण जारी रखने के लिए वर्ग में भय और आतंक पैदा करते हैं। ताकि वह कभी विरोध के कारण सिर उठाने का साहस न करें। वे इस में सफल तभी होते हैं जब सर्वहारा वर्ग एकता बद्ध नहीं होते। अलग-अलग रहने से उनकी यातनाएँ और पीड़ाएँ अलग-अलग होती हैं। उसे कई स्तरों पर शोषित होना पड़ता है। यथा-“‘फिर क्या जाने कैसे जवान लड़का नक्सलवादियों के बहकावे में आ गया। नौकरी को लातमार उन्ही के दल में शामिल हो, कंधें पर बंदूक उठाए जंगल-जंगल भटकने लगा। इधर बहु पेट से था। कोई खोज-खबर नहीं ली देवेन्द्र ने। एक दिन पुलिस उनका घर ढूँढ़ती उनके यहाँ आई। उन्होंने सूचना दी-उनका इकलौता बेटा देवेन्द्र पुलिस एनकाउंटर में दल के अन्य तीन खूंखार सदस्यों के साथ मारा गया।’” शोषित जनता अपने वर्ग संघर्ष की तैयारी कर चुका है। वे शोषकों के विरुद्ध एक जुट होकर संघर्ष कर रहे हैं, सामूहिक रूप से उन्हे दुश्मन घोषित कर चुका है। नक्सलवादी आन्दोलन ने वर्तमान न्यायव्यवस्था के प्रति अनास्था प्रकट की है। लेकिन अनास्था प्रकट करने मात्र से सर्वहारा वर्ग को न्याय नहीं मिल सकता तथा न शोषकों की अत्याचारी और अन्यायी प्रवृत्ति पर रोक ही लगा सकती है। इसलिए न्याय करने के लिए सर्वहारा वर्ग को नई पद्धति की तलाश करनी पड़ी है। जहाँ-जहाँ नक्सलवादी आंदोलन तेज है और सर्वहारा एक जुट होकर संघर्षशील है, वहाँ नक्सलवादी नेता अपना कानून और न्यायालय चला रहे हैं। वे अपने फैसले को सरस्ती से पालन करवाते हैं। “‘घरने पर बेटी हरामजादी रंडियों, जिनके हुसकाए हुसक रही, ऐसी बौड़म-बैली नहीं मैं कि उनकी पोल-पट्टी न सूँघपाऊँ, पवार बाबू! बुदिया विमला बेन को तो अपने ओट बटोरने से मतलब-डाकू- हत्याओं से मिले या रंडी-भुडुवों से। उनको क्या फरक पड़ता है? फरक पड़ता है हमको। हम कहीं जवान-जहील लड़कियों की धिंचई में पत्थर बांध कुआँ बावडी डूब मरे?’” यहाँ शोषित नारी के प्रति किए गए अनैतिक अन्यायों के प्रति विद्रोह प्रकट करते हैं।

अर्थाभाव ही नारी की दुस्थिति का मूल कारक है। नौकरानी नीलम्मा सर्वहारा वर्ग की प्रतिनिधित्व करनेवाली एक पात्र है। चोरी के इलजाम में मालकिन उसे घर से निकाल देती है नौकर लोगों के प्रति अविश्वास की भावना को यह घटना सूचित करती है। सर्वहारा वर्ग ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति के विरुद्ध बैठक करके एकजुट हो जाते हैं। दूसरी नौकरी की तलाश करती है। धनिक और दरिद्र के बीच का संघर्ष इन पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार द्वारा चित्रित किया गया है। यह सब वर्तमान न्यायव्यवस्था के प्रति अविश्वास प्रकट करता है। यह व्यवस्था असली अपराधी को दंड नहीं देता है। निर्दोष कमजोर वर्ग को चूसते हैं। सर्वहारा आंदोलन के विरुद्ध पुलिस तथा शासन की दमनकारी नीतियाँ भी उपन्यासों में वर्णित हैं। परस्पर एकता की स्थापना करके अपने वर्गीय हितों के समर्थन में सर्वहारा वर्ग संघर्ष करने लगा है। तब मार्क्स की अवधारणाओं को संपुष्टि भी मिलने लगी है। इस उपन्यास में सर्वहारा वर्ग की संघर्ष चेतना को कई रूपों में चित्रित किया गया है। वर्ग संघर्ष की यह स्थिति हिंसा के लपटों के बीच चमकती हुई सी प्रतीत होती है। शोषकों की संख्या इनी गिनी हैं और शोषितों की अनगिनत संख्या है सर्वहारा वर्ग की एकता इन शोषकों का दिल दहलाने लगी है।

आज सर्वहारा वर्ग अपने हक के लिए जागरूक है और अपनी हनुमान शक्ति का एहसास भी करने लगा है कि “औरों को मार गोली! कुर्छे के मेटक वर्जनाहीनता को बोल की परिभाषा गढ़े हुए बैठे हैं। उनकी दुरबीन उनको मुबारक। अपने अनुभवों से तू अपनी परिभाषा गढ़। आत्मविश्वास आर्जित कर ये दीन-हीनता, झटक, उतार फेंक केंचुला।” उपर्युक्त पंक्तियों में श्रमिक वर्गों की चेतावनी दिया जा रहा है। यह मजदूरों के बीच उनकी शक्ति का बोध कराने लायक है। उनके अपने अवकाशों और अधिकारों को प्राप्त करने लिए संघर्ष करने का आह्वान देते हैं।

समाज शोषण के विरुद्ध विद्रोह भड़कते ही गाँव का सर्वहारा शोषित वर्ग एक जुट होने लगा है। इसके विरोध में अपनी लड़ाई की भूमिका सर्वसम्मति से तय कर लेता है। उसमें शोषण के विरुद्ध चेतना इतनी अधिक उफान ले रही है कि सर्वहारा वर्ग ताजगी के लिए भाषण तथा अनेक दलों, पार्टियों की योजना भी करती है यथा-“वहीं हत्यारा सुभाष बंसल हमारे मजदूर भाइयों के घरों की छत का सौदा करने जा रहा। उनके पावों-तले के आंगन का सौदा करने जा रहा। उनके सपनों का सौदा करने जा रहा। उनके हिस्से की भूमि पर अट्टालिकाएँ बनाने जा रहा। सुभाष बंसल को “कामगार आघाडी” की कड़ी चेतावनी है कि उसकी निर्माण कंपनी “रिचर्डसन बेवरी के साथ गरीब श्रमिकों की आवासीय भूमिखंड का सौदा न करें। हरगिज-हरगिज न करें। करें तो उसके कुपणिणाम भुगतने के लिए तैयार रहें।”

सर्वहारा वर्ग के आपसी मत भेद धर्म संप्रदाय से ऊपर उठकर शोषक वर्ग के विरुद्ध संघर्ष करने की मंशा के रूप में बन चुका है। साम्यवादी विचारों का पोषक अन्नासाहब, विमलाबेन, पवार आदि मात्र पूँजीवादी राज्य का विरोध करते हुए शोषण मुक्त समाज की कल्पना करते हैं। उन्होंने कहा है कि “श्रमिकों की अस्मिता का प्रश्न भरे लिए राजनीति का खेल नहीं। समता अर्जन का ध्वजता हुआ संघर्ष है। अपने रक्त की..... रक्त की आखिरी बूँद तक मैं इस लड़ाई को जारी रखूँगी।” उपर्युक्त पंक्तियों में उपन्यासकार ने पात्रों के माध्यम से यह कल्पना की कि एक समत्व समाज की स्थापना करें क्यों कि सारी जनता समभाव से शांति के साथ जियें। सर्वहारा वर्ग की नारी के आर्थिक एवं सामाजिक शोषण के विरुद्ध विद्रोह चेतना को स्वर देने का स्तुत्य प्रयास लक्षित होता है। इस वर्ग की नारी पर किए जाने वाले अत्याचारों का खंडन किया गया है। इस प्रवृत्ति का अंत करने सर्वहारा वर्ग को संगठित करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। चित्रा मुद्गल ने यह विचार व्यक्त किया कि नारी के प्रति और सर्वहारा वर्ग के प्रति स्वस्थ एवं मानवीय दृष्टि को अपनाकर उनकी गरीबी को हटाने का प्रयत्न किए बिना समाज का विकास संभव नहीं होता है। अपनी इन्हीं मान्यताओं को प्रतिनिधि नारी चरित्रों के माध्यम से उपन्यासकार ने व्यक्त किया है।

संदर्भ ग्रन्थ:

1. आँवा: चित्रा मुद्गल
पृ.सं: 55, 177, 178, 364, 477, 481.
2. अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों का समाज शास्त्रीय अध्ययन डॉ. गोरखनाथ तिवारी।
3. आठवें तथा नवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में नारी: डॉ. वंदना सोपानराव मोहिते।
4. आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविधरूपों का चित्रण: डॉ. मोहम्मद अजहर देरीवाला।
5. महिला उपन्यास कारों की रचनाओं में सामाजिक संदर्भ - डॉ. शीला प्रभावर्मा।
